जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौनसिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 14 संख्याः 311 प्रभात हिण्डौन सिटी, रविवार 11 सितम्बर, 2022 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

अमेरिका में नैशनल पार्क जाने वाले पर्यटकों और वाइल्डलाइफ प्रेमियों की सबसे बड़ी इच्छा होती है कि उन्हें ''मूज़'' (एक प्रकार का हिरण) नज़र आ जाए, पर अब यह मुश्किल होता जा रहा है। एक समय, मूज़ की आबादी में वृद्धि को संरक्षण की शानदार सफलता माना जाता था पर अब कई जीव वैज्ञानिक इसके भविष्य को लेकर चिंतित हैं। वैज्ञानिकों ने कहा, जैसा कि कई प्रजातियों के साथ होता है, जिनके बारे में हम सोच लेते हैं कि उनकी आबादी स्थिर है, पता चलता है कि, उन्हें जलवायु परिवर्तन के कारण नए खतरों का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका के दक्षिणी न्यू इंग्लैण्ड में कड़ी ठंड की वजह से विन्टर टिक्स (चिचड़ी), जिन्हें मूज़ टिक्स भी कहते हैं, की आबादी नियंत्रित रहती है, लेकिन हल्की ठंड में ये टिक्स खूब फलती फूलती हैं, इसलिए मूज़ के लिए बड़ा खतरा बन रही हैं। यू.एस. में उत्तर पूर्व के राज्य, मेन के एक क्षेत्र में हुए शोध के अनुसार मूज़ के 90 प्रतिशत बच्चे इस वर्ष टिक्स संक्रमण की वजह से मर गए। एक मूज़ पर चालीस हज़ार से नब्बे हज़ार तक टिक्स पाई गईं। रॉकीज़ पर्वतीय क्षेत्र में भी मूज़ की आबादी घट रही है। आइडाहो में हुई रिसर्च में पाया गया है कि, आबादी में दूरगामी कमी के कई कारक हैं, जिनमें रोग, आवास विनाश, और परभक्षी प्रमुख हैं, दूसरे इन्हें गर्मी भी बहुत लगती है। यही वजह है कि, गर्मी के मौसम में इन्हें पानी के आस-पास ही देखा जाता है। मूज़ विशाल जानवर हैं, इसलिए मैदानों में ये कभी-कभी नज़र आ जाते हैं, लेकिन जब आप खासतौर पर इन्हें देखना चाहें तो इन्हें ढूंढना मुश्किल हो जाता है। लेकिन हर जानवर की तरह यदि इनके भोजन का स्रोत पता हो तो जानवर ढूंढना आसान होता है। बड़े आकार के कारण मूज़ को बहुत सा भोजन चाहिए होता है। एक वयस्क हर रोज 40-60 पाउण्ड खाना खाता है। एस्पेन, बर्च, विलो और जलीय पौधे इनका प्रिय भोजन हैं और ये सब पेड़ ग्लोबल वॉर्मिंग से प्रभावित हो रहे हैं।

चार्ल्स को मापने के लिये क्या मापदण्ड होंगे

''क्वीन'' ने अशांत समय में स्थिरता प्रदान की थी ब्रिटेन को, क्या चार्ल्स इस भूमिका में खरे उतरेंगे

- जहां तक हाव-भाव व वेशभूषा का सवाल है, चार्ल्स भी उतने ही ''कंज़रवेटिव'' (परम्परावादी) हैं, जितनी उनकी मां थीं।
- क्वीन, कम ''हील'' वाले लोफर्स जूते पहनती थीं, चार्ल्स भी पुरानी स्टाइल के सूट तब तक पहनते हैं, जब तक वे घिसे हुए से न दिखने लग जायें। उनके बालों का स्टाइल भी वही है जो उन्होंने अपने स्कूल के दिनों में अपनाया था।
- पर, जहां तक भावावेश का सवाल है, अभी तक तो वे उस पर उतना नियंत्रण नहीं रख पाते, जितना ''कंट्रोल'' उनकी मां का था।
- साथ ही, राजनीति में तटस्थता के मामले में वे अपनी मां के मुकाबले कमजोर से लगते हैं। उन्होंने प्र.मंत्री टोनी ब्लेयर के समय फॉक्स हंटिंग के खिलाफ अभियान चलाया। वे दलाई लामा का समर्थन खुले रूप से करते हैं तथा 2015 में चीन के सम्मान में दिये गये औपचारिक भोज में वे अनुपस्थित रहे, जिस पर विदेश मंत्रालय ने भृकुटी तानी थी, क्योंकि यह बकिंघम पैलेस की राजनीतिक तटस्थता से मेल नहीं खाती।
- फिलहाल चार्ल्स की लोकप्रियता 54 प्रतिशत है, जबकि क्वीन की 81 प्रतिशत थी, तथा प्रिंस विलियम की 75 प्रतिशत है। चार्ल्स को लेकर अभी तक प्रिंसेज़ डायना से शादी व शादी का सफल न होना, एक अटपटा सवाल बना हुआ है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितम्बर। जब एक राजा की मौत होती है, तब प्रजा सांसें थामकर प्रतीक्षा करती है कि नया उत्तराधिकारी क्या करेगा। क्वीन ऐलिज़ाबेथ द्वितीय के निधन के बाद ग्रेट ब्रिटेन में यह मनोभाव सर्वाधिक स्पष्ट होगा। चार्ल्स तृतीय, जो अपनी इस पारी के लिए पिछले सात दशक से तैयार थे, पर सबकी कड़ी नज़र होगी कि अपनी नई जिम्मेदारी को कैसे निभाते हैं।

किंग चार्ल्स तृतीय पूरे विश्वास से और स्वर्गीय क्वीन के आदर्शों के अनुरुप कार्य करने के वादे के साथ मैदान में मौजूद हैं। लेकिन क्या ऐसा है कि उनकी पारी को जज किया जाएगा? क्या यह राजनीति, मानवतावाद, उदारता और स्थायित्व उस विरासत से पृथक होगा जिसका उनकी स्वर्गीय मां ने उदाहरण पेश किया था या नए किंग राजनीति और अर्थव्यवस्था की लौकिकता व जटिलताओं में सीधे शामिल हो जाएंगे।

आगे क्या हो सकता है, उसको लेकर ''द इकोनॉमिस्ट'' ने प्रकाश डाला है। उसका कहना है कि लम्बे समय से जानकारी होने के बावजूद कोई वास्तव में यह नहीं जानता कि रॉयल फैमिली या ब्रिटेन के लिए चार्ल्स तृतीय के क्या मायने होंगे। शेयर बाजारों और पुरानी सफलताओं की भांति राजाओं के भविष्य के प्रदर्शन को लेकर भी कोई मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है। एडवर्ड अष्टम को शुरुआत में काफी मॉडर्न माना गया। वे इतने मॉडर्न थे कि उन्होंने पद

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सोनोग्राफी जांच

जयपुर, 10 सितंबर (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि कम्प्यूटर बेस्ड ट्रेनिंग (सी.बी.टी.) परीक्षा पास करे बिना ही मान्यता प्राप्त संस्थान से सोनोग्राफी प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए चिकित्सक सोनोग्राफी और अल्ट्रासाउंड का कार्य कर सकते हैं। जस्टिस महेन्द्र गोयल ने यह आदेश डॉ. भूपेश दयाल व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता सुनील कुमार सिंगोदिया ने अदालत को बताया कि प्रीकॉन्सैप्शन एंड प्रीनेटल डायग्नॉस्टिक टैक्नीक्स एक्ट (पी.सी.पी.एन.डी.टी. एक्ट) के प्रभाव में आने के बाद चिकित्सा विभाग ने एक मार्च 2021 को परिपत्र जारी कर प्रावधान किया कि अल्ट्रासाउंड व सोनोग्राफी का छह माह का प्रशिक्षण प्राप्त चिकित्सक सोनोग्राफी केंद्र संचालित करने से पूर्व राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय से सी.बी.टी. परीक्षा उत्तीर्ण करें, अन्यथा ये सोनोग्राफी संबंधी कोई भी जांच नहीं

- राजस्थान हाई कोर्ट ने चिकित्सा विभाग के मार्च 2021 के प्रावधान को खारिज कर दिया, जिसमें सोनोग्राफी जांच करने वाले चिकित्सक के लिए कम्प्यूटर बेस्ड ट्रेनिंग को अनिवार्य करार दिया गया था।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'अशोक गहलोत की विडम्बना ज्यों की त्यों बरकरार है'

भरसक प्रयास के बावजूद स्थिति वो ही है, जो उस दिन थी जब सोनिया गांधी ने उन्हें कहा था, उन्हें दिल्ली में जिम्मेवारी संभालनी है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री बने रहने तथा उनके पार्टी अध्यक्ष बनने के गांधी परिवार से बाहर निकलने के लिये सारी युक्तियाँ एवं दाँव-पेच काम में ले लिये हैं।

एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि स्थिति जस की तस है तथा कोई बदलाव नहीं हुआ है क्योंकि सोनिया गांधी ने गहलोत को सूचित कर दिया है कि उन्हें पार्टी की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेनी ही होगी।

जब मुकूल वासनिक ने ए.आई.सी.सी. महासचिव एवं मध्य प्रदेश प्रभारी पद से इस्तीफ दिया था, उस के बाद, ए.आई.सी.सी. में यह अटकल जोरों पर थी कि कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिये मुकूल का नाम भी विचाराधीन हैं।

लेकिन सूत्रों का कहना है कि यह अटकल निराधार थी। मुकूल वासनिक को कमल नाथ की माँग पर हटाया गया हैं। उन्होंने सोनिया गांधी से यह कहा बताते हैं कि वासनिक को मध्य प्रदेश प्रभारी पद से हटा दिया जाना चाहिये क्योंकि उनके साथ काम करना मुश्किल है। उनके इस अनुरोध को तवज्जोह दी गई तथा मुकूल को मध्य प्रदेश प्रभार से मुक्त कर दिया गया हैं लेकिन वे बिना किसी अन्य प्रभार के, महासचिव पद पर बने हुये हैं।

आशा की जा रही है कि जब भी ए.आई.सी.सी में फेर बदल होगा, उन्हें संगठन में कोई अन्य जिम्मेदारी दी जा सकती हैं।

चूँकि अशोक गहलोत के साथ मुकूल वासनिक के मधुर सम्बन्ध हैं, इसलिये यह भी सम्भव है कि उन्हें के.सी. वेणु गोपाल के स्थान पर, ए.आई.सी.सी. महासचिव के रूप में संगठन प्रभारी बना दिया जाये तथा के.सी. वेणु गोपाल पार्टी कोषाध्यक्ष बना दिये जायें।

कल कन्या कुमारी में मीडिया से बातचीत करते हुये, राहुल गांधी ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे (राहुल) कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बनेंगे। उन्होंने कहा कि उनके मन में कोईअलझन या भ्रम नहीं

- राहुल गांधी ने गहलोत की विडम्बना पर पुष्टि की मोहर लगा दी, कन्याकुमारी में मीडिया से बात करते हुए जब उन्होंने कहा कि, उनके दिमाग में कोई ''कंफ्यूज़न'' नहीं है कि, वे अध्यक्ष नहीं बन रहे।
- मुकुल वासनिक से मध्य प्रदेश का प्रभार लिये जाने के बाद, गहलोत खेमा कुछ राहत महसूस कर रहा था कि, मुकुल वासनिक को कांग्रेस अध्यक्ष बनाने के लिये ही उनसे एम.पी. का कार्यभार वापस लिया गया है।
- पर, शीघ्र ही उजागर हो गया कि, वासनिक को कमलनाथ की मांग पर हटाया गया है, क्योंकि कमलनाथ ने सोनिया गांधी से शिकायत की थी कि, वासनिक के साथ काम करना असंभव है।
- अब चर्चा यह है कि, गहलोत के अध्यक्ष बनने के बाद, वासनिक को संगठन कार्यों का महासचिव बनाया जायेगा, गहलोत व वासनिक की निकटता देखते हुए तथा वर्तमान संगठन महासचिव वेणु गोपाल को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया जायेंगे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'22 करोड़ बनाम 7 लाख'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितम्बर। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने शनिवार को ट्वीट किया कि कितने दुख की बात है कि मोदी सरकार हर साल दो करोड़ नौकरी देने के अपने वादे को स्वयं ही झूठ सिद्ध कर देती है। उन्होंने कहा कि नौकरी के लिये 22 करोड़ लोगों ने आवेदन पत्र भरे थे लेकिन उनमें से केवल 7 लाख लोगों को ही रोजगार मिल सका।

उन्होंने कहा, ''भटकाओ जनता पार्टी (बीजेपी) नहीं चाहती कि इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा हो।'' उन्होंने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा युवाओं को संगठित करने की दिशा में उठाया गया एक कदम है ताकि वे इस बिन्दु पर अपनी आवाज उठा सकें।

इसी बीच, भारत जोड़ो यात्रा में पैदल चलते हुये, पार्टी प्रवक्ता पवन खेड़ा तथा मनीष भंडारी ने एक बयान में कहा कि अपनी इस पदयात्रा में, राहुल गांधी स्थानीय लोगों के साथ सीधे बातचीत करते रहना जारी रखे हुये हैं।

- कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने ट्वीट किया कि, मोदी सरकार के 8 साल के शासनकाल में 22 करोड़ लोगों ने रोजगार के लिए आवेदन किया पर मात्र 7 लाख को ही नौकरी मिली।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

किस के कपड़े ज्यादा महंगे और फैशनेबल हैं?

''फैशन वॉर'' छिड़ा मोदी व राहुल के बीच

-श्रीनदं झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितम्बर। ऐसा लगता है कि राजनेताओं तथा मुख्य धारा के मीडिया ने इन दिनों महँगाई, बेरोजगारी या खाद्यान्न की सम्भावित कमी की चिन्ता करने के बजाय, स्वयं को फैशन-युद्ध के बीच लाकर खड़ा कर दिया हैं। जब भाजजा नेताओं ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुये कहा कि वे कथित रूप से 41000 रू. मूल्य की ''बरबरी टी-शर्ट'' पहनते हैं, तो उसके कांग्रेस के छुटभैये की बदला लेने के लिये सोशल मीडिया पर सक्रिय हो गये तथा प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधते हुये कहने लगे कि वे बहुत महँगा सूट तथा सनग्लासेज धारण करते हैं। सोशल मीडिया इस समय प्रधानमंत्री द्वारा काम में लिये जाने वाले विदेशी ब्रान्डेड सामानों के नामों एवं उनकी कीमतों से भरा पड़ा है-बोइंग द्वारा डिजायन किये गये उनके विशेष विमान से लेकर उनकी बी.एम.डब्ल्यू कार तक, अमेरिकन कैनेथ कॉल जूतों से लेकर उनकी इटेलियन घड़ी ''रोजर ड्युबुई तथा पढ़ ने के काम आने वाले उनके 'कूपर विज़न' चश्मे तक।

तृणमूल कांग्रेस नेता डेरेक ओ ब्रायन ने इस फैशन युद्ध में एक नईचीज और जोड़ दी है-उन्होंने ऐसी टी-शर्ट लॉन्च की हैं, जिन पर गृहमन्त्री अमित शाह की तस्वीर बनी हुईहै तथा लिखा हुआ है: ''भारत का सबसे बड़ा पप्पू''। ज्ञातव्य है कि भाजपा नेता राहुल गांधी की निन्दा करते हुये, उनके लिये प्राय: ''पप्पू'' शब्द का इस्तेमाल किया करते हैं। कोलकाता से दिल्ली की अभी हाल की हवाई यात्रा के दौरान, ओ' ब्रायन स्वयं भी यह टी-शर्ट पहने हुये थे। ये टी-शर्ट आगामी दुर्गापूजा महोत्सव के दौरान, तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं तथा स्वयंसेवकों को बड़े पैमाने पर बाँटी जायेंगी।

2015 में, जब अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प भारत यात्रा पर आये थे, उसे समय प्रधानमंत्री मोदी ने बदं गले का सूट पहना था, जिसके बारे में कांग्रेस नेताओं ने उन पर आरोप लगाते हुये, उसकी कीमत 10 लाख रू. बताई थी। गुजरात के हीरा-व्यापारी रमेश भीखाभाई ने सूट मोदी को तोहफे में दिया था तथा बाद में उसकी नीलामी 15 लाख रू. में हुईबताई जाती हैं। दिसम्बर, 2019 में, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने चार फोटो ट्वीट किये थे, जिन पर प्रतिक्रिया देते हुये कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने आरोप लगाया था कि मोदी जर्मन 'मेबैक' चश्मा पहने हुये है, जिसकी कीमत 1,69,000 रू. से शुरू होती है। कांग्रेस ने यह दावा किया है कि बरबरी टी शर्ट्स की कीमत 5000रू से ज्यादा नहीं होती, वहीं कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने प्रधानमंत्री पर जबरदस्त प्रहार करते हुये, उनके ''महँगे शॉल, कोट, घड़ी, पैन, कार तथा जलपान'' पर निशाना साधा हैं।

- भाजपा ने टिप्पणी की कि, इकतालीस हजार की बरबरी टी शर्ट पहन कर राहुल भारत जोड़ो यात्रा पर निकले हैं।
- कांग्रेस प्रवक्ताओं ने सोशल मीडिया पर पलटवार कर बताया कि, मोदी उनके लिये बोइंग कम्पनी द्वारा विशेष रूप से निर्मित हवाई जहाज में यात्रा करते हैं, उनकी गाड़ी भी साधारण नहीं, बी.एम.डब्ल्यु. द्वारा निर्मित विशेष कार है, उनके जूते भी विशेष हैं, अमरीकन कम्पनी कैनेथ कोल के लोफर्स तथा वे कूपर विजन कम्पनी के रीडिंग ग्लासेज़ ही काम में लेते हैं।
- सोशल मीडिया के अनुसार राहुल की बरबरी टी शर्ट की कीमत 5000 रूपये है, जबकि मोदी के चश्मे की कीमत 1,69,000 रूपये है।

शाह ने तनोट माता के दर्शन किए

जैसलमेर, 10 सितम्बर (नि.सं.)। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को भारत-पाक सीमा पर स्थित तनोट माता मंदिर में दर्शन किए।

ज्ञात रहे कि अमित शाह देश के पहले गृह मंत्री हैं जिन्होंने 9 माह की अल्प अवधि में दूसरी बार तनोट माता के दर्शन किए और देश की खुशहाली के लिए प्रार्थना की।

- केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को तनोट माता के दर्शन किए। वे पहले गृह मंत्री हैं जो 9 माह की अल्प अवधि में दूसरी बार यहां आए हैं।

मोटा भाई के नाम से विख्यात केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, सीमा सुरक्षा बल के डीजी पंकज सिंह भी थे। शाह ने भारत-पाक युद्ध के

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अमित शाह ने जोधपुर संभाग के बूथ सम्मेलन में जोश भरने की कोई कसर नहीं छोड़ी

जोधपुर , 10 सितम्बर (निसं)। जोधपुर के दशहरा मैदान में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हजारों कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में बूथ सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आपका यह उत्साह और जोश 2023 में राजस्थान में तीन चौथाई बहुमत की भाजपा की सरकार बनाएगा और 2024 में नरेंद्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाएगा।

शाह ने कहा कि सरकारें बनती हैं। कार्यकर्ताओं के जोश, जज्बे और परिश्रम से, इतनी गर्मी में जोधपुर संभाग के 25 हजार से अधिक कार्यकर्ता बैठे हैं। यह बताता है कि यहां 2023 में भाजपा सरकार बनने जा रही है।

उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता सशक्त बूथ बनाता है, सशक्त मंडल बनाता है और वही चुनाव जिताता है। राजस्थान के 52 हजार बूथों में से 47 हजार बूथों तक बूथ कार्यकर्ता के फोटो के साथ रजिस्टर करने का कार्य हमारे प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने कर दिखाया है, इसके लिए उनको और समस्त टीम भाजपा, राजस्थान को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं।

उन्होंने कहा कि मित्रों आज मैं सुबह ही तनोट मां के तीर्थ स्थान, जहां मोदी जी ने 19 करोड़ के खर्चे से एक बहुत बड़ा यात्रा धाम बनाने का निर्णय किया है, का भूमि पूजन करके आया हूं। यह मानें कि तनोट मां ने 1965 और 1971 के युद्ध में हमारी पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित किया है। आज भी 43 डिग्री तापमान में हमारा जवान मां को प्रणाम करके सीमा पर खड़ा रहता है। वह दुश्मनों के दांत खट्टे कर कर ही वापस आता है।

उन्होंने कहा कि ''मित्रों आज जब मैं यहां आया हूं तब राजस्थान भाजपा को जनसंघ के समय से मजबूत करने वाले भैरों सिंह शेखावत जी, सुंदर सिंह भंडारी जी, आचार्य राज किशोर जी, ललित किशोर चतुर्वेदी जी, भंवरलाल शर्मा जी, रामदास अग्रवाल जी, रघुवीर सिंह कौशल जी, मदन लाल सैनी जी को याद करता हूं। हमारे पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत जी को भी प्रणाम करना चाहता हूं। यही वह लोग थे जिन्होंने राजस्थान को बदलने का काम किया।''

जोधपुर संभाग के 9 हजार से अधिक बूथों के 25 हजार से अधिक बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन में पहुंचे।

बूथ सम्मेलन में के. लक्ष्मण, अरुण सिंह, सतीश पूनिया, गुलाबचंद कटारिया, चंद्रशेखर, राजेंद्र राठौड़, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, केन्द्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, कैलाश चौधरी, अर्जुन राम मेघवाल, अलका गुर्जर इत्यादि पदाधिकारी, जोधपुर संभाग के सभी सांसद, विधायक, पूर्व सांसद, पूर्व विधायक एवं अन्य सभी जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राज परिवार की सम्पत्ति

जयपुर, 10 सितंबर (का.सं.)। किराया अधिकरण मामलों की विशेष अदालत क्रम-2 महानगर प्रथम ने पूर्व राजपरिवार की संपत्ति, रामबाग स्टाफ क्वार्टर, में विगत सात दशकों से रहे परिवार को घर खाली करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने माना कि प्रतिवादी संपत्ति पर अतिक्रमी है। वहीं अदालत ने प्रतिवादी मोहन सिंह को वाद दायर करने से वास्तविक कब्जा प्राप्ति तक हर माह पन्द्रह सौ रुपए हर्जाना देने को कहा है। अदालत ने यह आदेश एसएमएस इन्वैस्टैन्ट कार्पोरेशन प्रा.लि. के दावे पर दिए।

- किराया प्राधिकरण मामले की विशेष अदालत ने रामबाग होटल के स्टाफ क्वार्टर में 7 दशकों से रह रहे परिवार को घर खाली करने के आदेश दिए हैं।

दावे में कहा गया कि प्रतिवादी के पिता नंदा पूर्व महाराजा

(शेष पृष्ठ 5 पर)